16.9.67 ओमशांति रात्रीक्लास

बच्चे जो भी अच्छी रीति सृष्टि चक्र को जानते हैं। समझना चाहिए कि जो भी यह स्थापन हो रहा है इतना ही कल्प पहले भी स्थापन हुआ था। फिकरात कोई नहीं रहती। आगे के लिए बच्चों को पुरुषार्थ करवाया जाता है। सिर्फ कोई को कहना है कि उंच ते उंच जो बाप है उनको याद करो तो अंत मते सो गते हो जावेगी। बाप के पास पहुंच जावेंगे। तुम बच्चे जो जानते हो कि हमारा बाप कौन है?बाप ने कहा है कि हमको याद करने से तुम पावन बन जावेंगे। उंच ते उंच बाप है पतित–पावन। उनको याद करने से ही पावन बन जावेंगे। पावन दुनियां सतयुगी दुनियां को कहा जाता है। कलियुग है पतित दुनियां। यह बातें तुम सहज ही समझते हो। और किसी की भी बुद्धि में बैठेगा नहीं। समझेंगे नहीं। जब तक कि बाप को नहीं समझते जिसको कि अल्फ कहा जाता है। अल्फ को ही नहीं जाना तो कुछ भी नहीं जाना। बाप कहते हैं कि मेरे को जानने से तुम सब कुछ जान जावेंगे मेरे ही द्वारा। अब तुम मुझ रचता और सृष्टि की आदि,मध्य,अंत को तुम जानते हो। और तो कुछ जानने की बात ही नहीं। कोई खाना नहीं खाते हैं रिद्धी–सिद्धी दिखाते हैं। कितना भी कोई कुछ भी करे ;परंतु फायदा ही क्या है?बाप को याद करने से ही हम शांतिधाम–सुखधाम में जा सकते हैं। बाकी (जो कुछ) भी पुरुषार्थ करते हैं पैसे कमावेंगे। साधुओं आदि के पास भी पैसे बहुत हैं। यह नालेज तुम्हारे लिए तो रत्न है। बहुत उंच कमाई है। यह और कोई कब सिखलाय न सके। तुम बच्चों को बाप आकर समझाते हैं। बाप आवेंगे तो स्वर्ग का सुख देंगे। कुछ तो कार्य बाप करते होंगे ना। तुम जानते हो फिर से स्वर्ग का वर्सा देने पुरुषार्थ कराते हैं। मत देते हैं। इसलिए गाया हुआ है बेहद के बाप की गत–मत न्यारी है। भक्तिमार्ग में गाते हैं बाबा आप आवेंगे तो हम उस एक ही मत पर चलेंगे। अभी तुम जानते (हो) भक्ति तो आधा कल्प से चली आई है। द्वापर से शुरू होती है। सीढ़ी में भी लिखना चाहिए यह वेद,उपनिषद आदि सब .....शुरू होते हैं। कोई कुछ न समझते हैं तो बकते रहते हैं। वेद–शास्त्र आदि जो कुछ पढ़ते हैं यह है फाल्तू बकना। फायदा कुछ भी नहीं। तब बाप कहते हैं फाल्तू क्यों बकते हो?अन्चंडर बात को फाल्तू कहा जाता है। भक्ति फिर मिलता है ज्ञान। तुमको कितनी खुशी होती है। ज्ञान सागर बाप हमको ज्ञान देते हैं। सदगति कहा जाता है स्वर्ग को। गति शांतिधाम। सदगति फिर होती है दुर्गति। बच्चे समझते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहना है। गृहस्थ के लिए व्यवहार करना पड़ता है। इसके लिए पढ़ना भी पड़ता है। आगे फीमेल सिर्फ घर का काम करती थीं। पढ़ाने का कोर्स अभी जास्ती है ;क्योंकि फीमेल्स भी बहुत नौकरियां में रहती हैं। फिर वहां खराब भी बहुत होती हैं। बहन पर भी क्रिमिनल आई नहीं हो सकती है। ब्लड कनेक्शन वाले बहने में कब क्रिमिनल दृष्टि होती नहीं। दूसरे को देखते हैं। भल बहन कहते हैं फिर भी दृष्टि चली जाती है। तुम सभी हो बहन–भाई। तुम्हारी कब भी क्रिमिनल आई होनी न चाहिए। हरेक ऐसा कहता है। नई बातें हैं ना। यह भी जानते हो भक्ति और ज्ञान अलग है। ज्ञान से सदगति होती है। भक्ति से दुर्गति होती है। किसी (को) भी समझाओ बोलो यहां से भक्ति शुरू होती है। फिर पिछाड़ी सभी की सदगति होती है। इतने थोड़े बचते हैं। बाकी सभी को बाप आय गति सदगति करते हैं। गति शांतिधाम, सदगति सुखधाम को कहा जाता है। ....दुःखधाम को भूलते जाओ। यह सभी कब्रदाखिल होनी है। इनसे प्यार रखने से क्या फायदा?पुरानी दुनियां खतम हो जावेगी। यह कोई काम की नहीं है। इसमें रहते हुए जैसे कि देखते नहीं। इसको कहा जाता है बेहद का सन्यास। तुम जानते हो हम नई दुनियां के लिए तैयार हो रहे हैं। तुम बच्चों की मत और दुनियां से न्यारी है। जैसे ईश्वर की गत–मत न्यारी है वेसे तुम्हारी भी न्यारी है। एक ही घर में देखो बाप की मत अलग तो बच्चे की मत अलग। श्रेष्ठ से श्रेष्ठ भगवान की श्रीमत मिलती है। उंच ते उंच बाप है। कृष्ण हो नहीं सकता। बाप के श्रीमत पर चलने वाले ही श्रेष्ठ बनते हैं। तुम जानते हो हमारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी फिर आकर शरीर धारण करेगी। वानप्रस्थ माना वाणी से परे जाने का पुरुषार्थ करते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट।